पद ३९

(राग: खमाज - ताल: त्रिताल)

दाता तूंचि माणिकप्रभु मम नाथ।।ध्रु.।। स्वसत्ते जड तन ही चालवी। नसुनि असे सर्वांत।।१।। भू जल तेज समीर ख मन धी। अहंकृति पेरवी त्यांत।।२।। मनोहर म्हणे नेति नेति। वाखाणी वेद जगांत।।३।।